

नवभारत

संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

अफवाहों से सचेत रहने की जरूरत

वास्तविकता को प्रभावित कर सकती है। अंकड़े बताते हैं कि कई शहरों में ईंधन की खपत सामान्य से दो से तीन गुना तक बढ़ गई। यह वृद्धि किसी औद्योगिक या परिवहन मांग के कारण नहीं, बल्कि सामूहिक घबराहट का नतीजा है। जब हजारों लोग एक साथ पेट्रोल पंपों पर पहुंचते हैं, तो आपूर्ति श्रृंखला पर दबाव पड़ना स्वाभाविक है। टैंकों की आपूर्ति और पंपों की रिफिलिंग एक निश्चित प्रक्रिया के तहत होती है, जिसे अचानक बढ़ी मांग के अनुरूप तुरंत बढ़ाना संभव नहीं होता। यही कारण है कि अस्थायी अवस्था को लोग स्थायी संकट समझ बैठते हैं। सरकार और प्रशासन ने इस स्थिति को ठीक प्रयास मिलकर पूरे समाज में एक सकारात्मक और स्थायी परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करेंगे। जब समाज इस सत्य को स्वीकार कर लेगा कि स्त्री और पुरुष एक-दूसरे के प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं, और दोनों की समान भागीदारी से ही संतुलित एवं समग्र विकास संभव है। आइए भारत को एक महान नागरिक राष्ट्र बनाने के लिए एक साथ हुंकार करें।

वास्तविकता कमी नहीं है। इसके बावजूद, अफवाहों की ताकत इतनी अधिक है कि सरकारी आश्वासन भी कई बार लोगों के डर को तुरंत समाप्त नहीं कर पाते। यह स्थिति हमारे समाज में सूचना के प्रति बढ़ती संवेदनशीलता और कभी-कभी विवेकहीन प्रतिक्रिया को उजागर करती है। इस पूरे प्रकरण का एक चिंताजनक पहलू यह भी है कि लोग बिना आवश्यकता के ईंधन, भंडारण करने लगे। पेट्रोल को डिब्बों या बोतलों में भरकर रखना न केवल गैरजरूरी है, बल्कि अत्यवस्था को लोग स्थायी संकट समझ बैठते हैं। सरकार और प्रशासन ने इस स्थिति को ठीक प्रयास मिलकर पूरे समाज में एक सकारात्मक और स्थायी परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करेंगे। जब समाज इस सत्य को स्वीकार कर लेगा कि स्त्री और पुरुष एक-दूसरे के प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं, और दोनों की समान भागीदारी से ही संतुलित एवं समग्र विकास संभव है। आइए भारत को एक महान नागरिक राष्ट्र बनाने के लिए एक साथ हुंकार करें।

आवश्यकता है। सबसे पहले, नागरिकों को यह समझना होगा कि हर सूचना सत्य नहीं होती। सोशल मीडिया पर प्राप्त किसी भी खबर को बिना पुष्टि के स्वीकार करना या आगे बढ़ाना स्थिति को और बिगाड़ता है। दूसरे, आवश्यकता के अनुसार ही ईंधन लेना चाहिए। यदि वाहन में पर्याप्त पेट्रोल है, तो केवल डर के कारण पंप की ओर दौड़ना समस्या को बढ़ाने जैसा है। प्रशासन को भी चाहिए कि वह पारदर्शिता और त्वरित संचार के माध्यम से जनता का विश्वास बनाए रखे। साथ ही, अफवाह फैलाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई जरूरी है, ताकि भविष्य में इस तरह की स्थितियों को रोका जा सके। कुल मिलाकर यह घटना हमें यह सिखाती है कि किसी भी व्यवस्था की सबसे बड़ी परीक्षा संकट में नहीं, बल्कि अफवाहों के समय बढ़ती है, बल्कि सामूहिक संकट को भी हमें अंतरात्मा में साफ कहां है कि देश में पेट्रोल, डीजल और एलपीजी का पर्याप्त भंडार उपलब्ध है। आपूर्ति श्रृंखला पूरी तरह सक्रिय है और कहीं भी

महाकौशल की डायरी

श्रद्धांजलि सभा बन गई सियासी अखाड़ा...



अविनाश दोषि

विगत दिनों नरसिंहपुर में स्वतंत्रता सेनानी रानी अवंतीबाई लोधी के 168वें बलिदान दिवस पर आयोजित कांग्रेस की श्रद्धांजलि सभा अचानक सियासी अखाड़े में बदली तो स्थानीय भाजपा नेताओं को मांनों एक बड़ा मुद्दा मिल गया... हुआ भी कुछ इस तरह कि कांग्रेसी गुटबाजी को लेकर भाजपा नेताओं ने खूब चुटकियां लीं। कुछ भाजपाई शेरों शायरी तो कुछ स्थानीय लोकोक्ति के जरिये तंज कसते नजर आए। दरअसल श्रद्धांजलि सभा में भरे मंच से भाषण दे रहे कांग्रेस के विधानसभा प्रत्याशी रहे लाखन सिंह पटेल को लंबा भाषण देने से रोका गया, जिसके बाद लाखन सिंह के समर्थकों ने हंगामा करना शुरू कर दिया। बड़ी बात तो ये थी कि कांग्रेस के ही लाखन सिंह पटेल और पूर्व विधायक सुनील जायसवाल के बीच विवाद कांग्रेस के पूर्व सांसद व मुख्य अतिथि नकुल नाथ के सामने हुआ। जिसे देख नकुलनाथ भी सकते में आ गए।

राजनैतिक जानकारों की मांनों तो प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी को विवाद करने और अनुशासन तोड़ने वाले नेताओं की शिकायत की गई है, अब देखना होगा कि आने वाले दिनों में



इन पर किस तरह की कार्रवाई संगठन स्तर पर निश्चित की जाती है। प्रत्यक्षदर्शियों ने भी स्पष्ट किया कि यदि पुलिस बल स्थिति को नहीं संभालता तो नतीजा बेहद गंभीर सामने आता। पुलिस सूत्रों के मुताबिक पूरा विवाद छंटायकशी

के चलते हुआ था। दूसरी तरफ पूरे विवाद ने कार्यक्रम को गरिमा पर भी सवाल खड़े किए। खबर है कि लाखन सिंह पटेल को बीच में ही भाषण खत्म करने की बात को उनके समर्थकों द्वारा अपमान बताया गया और निंदा की गई कि संगठन जब एक है और संगठन का ही नेता भाषण लंबा दे रहा है तो उसे व्यक्तिगत रूप से अपमानित क्यों किया गया।

पूर्व विधायक ने रेत चोरी का कर दिया लाइव प्रसारण...



वर्तमान ग्रामीण कांग्रेस अध्यक्ष एवं जबलपुर के बरगी विधानसभा के पूर्व विधायक संजय यादव ने सत्ता पक्ष के नेताओं के साथ प्रशासनिक खेमे में सत्ता बली मचाई तो उनको घेरने की तैयारियां राजनैतिक मैदान में शुरू होने लगीं। हुआ वृ कि जिले के चरगावां से शहपुरा जाते वक्त मां नर्मदा के मालकच्छर घाट में दिनदहाड़े रेत का उत्खनन हो रहा था कि तभी वहां पहुंचे संजय यादव ने फेंसबुक लाइव शुरू किया और रेत के अवैध उत्खनन को लेकर पूर्व विधायक संजय यादव ने सोशल मीडिया में कलेक्टर के लिए भी संदेश लिखा कि साहब इस मुद्दे को गंभीरता से लें।

सर्वविदित है कि मां नर्मदा के तटों से रेत चोरी के लिए शहपुरा, चरगावां, बरगी, सिलुआ, जमतारा, खिरेहनी, मालकच्छर, सिहोरा आदि क्षेत्रों के घाट सर्वाधिक बदनमा हैं। सोशल मीडिया में संजय यादव ने दो टूक कहा है कि खनिज विभाग, जिला प्रशासन के अधिकारियों की संलिप्तता के कारण धड़ल्ले से मां नर्मदा का आंचल खननी हो रहा है इसलिए मैं आज ये लाइव चलाकर प्रमाण दे रहा हूं, प्रमाण सामने आते ही सवाल खड़े होने लगे कि आखिर कहां छिपकर बैठा है खनिज विभाग।

दोहरी भूमिका निभाते पकड़ी गई खाकी...

पिछले दिनों जिला अदालत जबलपुर के अंदर पुलिस कर्मी अधिवक्ता का काम करते रंगे हाथों पकड़ाया तो न्यायिक व्यवस्था पर तमाम सवाल खड़े हो गये। अधिवक्ताओं ने आरोप लगाकर दो टूक कहा कि बिना अदरुनी मिलीभगत के इस तरह की प्रक्रिया संभव नहीं है। इस कारनामे ने पूरे सिस्टम की पारदर्शिता पर गंभीर प्रश्नचिह्न लगा दिया है।

आरोप ये लगे कि जिला एवं सत्र न्यायालय जबलपुर के कोर्ट नंबर 2 के बाहर पुलिसकर्मी श्रीकांत गुर्जर (आबकारी) और श्वेता ठाकुर ने निर्धारित जुर्माना राशि से अधिक रुपए पशकरो से लिए। इसके बाद वह स्वयं ही ऑनलाइन माध्यम से जुर्माना जमा किए, जो कि स्थापित प्रक्रिया के विपरीत था। आरोप ये भी लगे कि पुलिसकर्मी न सिर्फ चालान पेश कर रहे थे, बल्कि पशकरो से सीधे संपर्क कर पूरे केस को प्रक्रिया खुद ही संभाल रहे थे। अधिवक्ता के द्वारा पकड़े गए पुलिस कर्मी का सोशल मीडिया में वीडियो भी जमकर वायरल हुआ तो खबर एस्प्री तक पहुंच गई। नतीजतन चालान ड्यूटी वाले पुलिस कर्मियों की आपात बैठक बुलाई गई और उन्हें सख्त लहजे में कहा गया कि आपका जितना काम है सिर्फ उतना ही करें नहीं तो खेर नहीं होगा। उधर सोशल मीडिया में वीडियो वायरल होते ही पुलिस कर्मियों की अवैध वसूली को लेकर भी शहरवासियों द्वारा काफी तंज कसे गए। पूरे मामले ने खाकी पर दाम तो लगाया ही इसके साथ ही पुलिस की कार्यशैली को भी कठघरे में खड़ा किया।



पूजनीयता से समानता की ओर भारतीय नारी



सुश्री चेतना

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता, अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवताओं का वास होता है। प्रश्न यह है कि क्या केवल पूजनीय कह देने भर से महिलाओं को

वास्तव में समान अधिकार और सम्मान मिल पाया है? क्या समाज ने उन्हें समान अवसर, स्वतंत्रता और अपने जीवन से संबंधित निर्णय लेने का अधिकार प्रदान किया है? यदि हम स्त्री को देवी का स्वरूप देकर उसे मंदिर की वेदी पर स्थापित कर दें, तो यह देखने में सम्मानजनक अवश्य प्रतीत होता है, परंतु वह, वहाँ से तो अपनी इच्छा से उठ सकती है, न ही अपने विचार स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त कर सकती है और न ही अपने जीवन के निर्णय स्वयं ले सकती है। यही पितृसत्ता का असली रूप है, जो एक अग्रदूत बंधन का रूप ले लेती है, जो स्त्री की स्वतंत्रता, निर्णय, स्वायत्तता और उसके व्यक्तित्व के समुचित विकास को सीमित कर देती है। लेकिन 20वीं सदी के मध्य में मां को फिर से एक प्रेरक प्रतीक बना दिया गया, जैसे भारत माता या शक्ति और रक्षा करने वाली मां के रूप में, बेटी के रूप में महिला को देखने से एक नई सोच शुरू हुई—बचपन से ही लड़कियों को दार्द, किशोरावस्था में डर और

परिवर्तन की वास्तविक शुरुआत समाज के व्यापक स्तर से नहीं, बल्कि उसकी सबसे छोटी और सबसे महत्वपूर्ण इकाई—परिवार और स्वयं से होती है। यही वह आधार है जहाँ से विचार, संस्कार और दृष्टिकोण विकसित होते हैं। अतः यह बदलाव मुझसे और मेरे अपने परिवार से प्रारंभ हो सकता है। यदि प्रत्येक परिवार अपने घर में बेटा और बेटी के बीच समान व्यवहार सुनिश्चित करे—उन्हें शिक्षा, पोषण, अवसर और निर्णय के अधिकार में समानता प्रदान करे—तो यही छोटे-छोटे प्रयास मिलकर पूरे समाज में एक सकारात्मक और स्थायी परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करेंगे। जब समाज इस सत्य को स्वीकार कर लेगा कि स्त्री और पुरुष एक-दूसरे के प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं, और दोनों की समान भागीदारी से ही संतुलित एवं समग्र विकास संभव है। आइए भारत को एक महान नागरिक राष्ट्र बनाने के लिए एक साथ हुंकार करें।

असुरक्षा, शादी के बाद घर छोड़ने का दुख, अकेलापन, और अपनी पहचान खोने का एहसास, फिर जब एक बेटी का जन्म होता है, तो वही दृढ़ और अनुभव दोबारा दोहराए जाते हैं। समय के साथ मां का प्रतीक कम इस्तेमाल होने लगा। उसकी जगह दो नई छवियां सामने आई—एक बेटी के रूप में महिला और दूसरी पत्नी (पीडित/संकोच) में जीने वाली महिला। इन दोनों में महिला को केवल माँ या पत्नी के रूप में देखने के बजाय उसके अपने व्यक्तित्व और उसकी काम करने की क्षमता पर ध्यान दिया। किन्तु 21वीं सदी में, इसके स्थान पर आर्थिक रूप से स्वतंत्र महिला को छवि उभरती दिखाई देती है, जिसे महिला श्रम बल भागीदारी दर में वृद्धि से देखा जा सकता है। फिर भी, पितृसत्तात्मक मानसिकता उसकी स्वतंत्रता पर नए प्रकार के नियंत्रण

थोपती है—जैसे उसके करियर की प्रगति, पहचान और घरेलू निर्णयों को निशाना बनाकर।

आजादी के बाद हमारा संविधान महिलाओं और पुरुषों के बीच समानता की बात करता है और जेंडर या सेक्स के आधार पर किसी भी तरह के भेदभाव को गलत मानता है, सिवाय कुछ प्राकृतिक अंतर के। फिर भी सबसे दुखद पहलू यह है कि देश में महिलाओं के विरुद्ध अपराधों की घटनाएँ कम नहीं हो रही हैं। राष्ट्रीय अपराध रिपोर्ट पर ध्यान दिया। किन्तु 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में महिलाओं के विरुद्ध कुल 4,48,211 मामले दर्ज किए गए, जो वर्ष 2022 की तुलना में वृद्धि को दर्शाते हैं। इन अपराधों में सर्वाधिक मामले पति या उसके संबंधियों द्वारा क्रूरता (लगभग 29.8

प्रतिशत) के हैं, जो यह स्पष्ट करते हैं कि महिलाओं के लिए सबसे असुरक्षित स्थान कई बार उनका अपना घर ही बन जाता है। इसी तरह पिछले पाँच दशकों में बलात्कार की घटनाएँ लगभग 12 गुना बढ़ी हैं। उदाहरण के लिए, 1972 में 2,562 मामलों से बढ़कर 2021 में 31,677 मामले दर्ज हुए। यह बेहद चिंताजनक स्थिति है।

महिलाओं के प्रति बढ़ते ऐसे अपराध यह सवाल खड़ा करते हैं कि क्या इस प्रकार की परिस्थितियाँ वास्तव में विकास या विकसित भारत की दिशा को दर्शाती हैं। मैं स्वयं एक लड़की हूँ, और मुझे यह अनुभव होता है कि भारत की अनेक लड़कियाँ इस दोहरी सामाजिक स्थिति से गुजरती हैं। हर लड़की के अपने अनुभव होते हैं—परिवार से लेकर समाज तक, घर से लेकर कार्यस्थल तक जहाँ वे भेदभाव, संघर्ष, चुनौतियाँ और प्रताड़ना का सामना करती हैं। इसलिए आज आवश्यकता इस बात की है कि स्त्री को केवल पूजनीय बनाकर ऊँचे स्थान पर स्थापित करने के बजाय उसे एक समान मानव के रूप में स्वीकार किया जाए। उसे वही अधिकार, वही अवसर और वही स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए, जो एक पुरुष को स्थिति है। उसे अपने जीवन से संबंधित निर्णय स्वयं लेने की स्वतंत्रता हो तथा समाज उसकी इच्छाओं और क्षमताओं का सम्मान करे।

(लेखिका खरगोन में सहायक प्रोफेसर एवं सामाजिक चिंतक,)

असम में हिमंत को गोगोई की चुनौती

असम विधानसभा की 126 सीटों का चुनाव केवल एक चरण में होने जा रहा है जिसमें द्वाइं करोड़ मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। चुनाव क्षेत्रों के पुनर्निर्धारण की वजह से इस बार नई चुनौतियाँ सामने आ गई हैं। एसआईआर का भी असर देखा जाएगा। हिमंता सरकार ने अंधधुंधी कड़ो हटाए हैं व घुसपैठियों पर एक्शन लिया है। इसका परिणाम मतदान पर पड़ना स्वाभाविक है। इसके अलावा सरकार ने सीधे लाभ हस्तांतरण वाली योजनाएँ और नोदेवी व लखपति नैदो शुरू की हैं। जिस तरह विहार में नीतीश सरकार ने हर महिला के खाते में 10,000 रुपये जमा कर चुनाव जीता था कुछ वैसा ही लाभ हिमंता सरकार को असम में हो सकता है। महिला वोटों का समर्थन चुनाव जिताने में बड़ी भूमिका निभाता है। बीजेपी असम की सभी सीटों पर चुनाव न लड़ते हुए कुछ सीटें एनडीए के घटक दलों असम गण परिषद व बीपीएफ के लिए छोड़ेगी। बोडो समुदाय के वोटों के लिए बीजेपी कभी यूपीपीएल तो कभी बीपीएफ के साथ गठबंधन करती रही है। असम में 6 समुदायों ने अनुसूचित

जनजाति का दर्जा देने की मांग की है। बीजेपी को इस संबंध में भी सोचना होगा। उत्तरी असम में आदिवासी वोट ज्यादा हैं। कांग्रेस, गौरव गोगोई के नेतृत्व में बीजेपी को चुनौती दे रही है। गौरव ने जोरहाट क्षेत्र से लोकसभा चुनाव जीता था। इस क्षेत्र में 10 विधानसभा सीटें हैं। अब विधानसभा चुनाव में उन्हें अपना दमखम दिखाना होगा। भारत जोड़ो यात्रा में गौरव गोगोई राहुल गांधी के साथ थे। उन्होंने खुद भी समय परिवर्तन—मोदी वचाओ, जाति वचाओ यात्रा निकाली थी। चुनाव क्षेत्र परिसीमन, मतदाता सूची में संशोधन तथा महिला मतदाताओं के रुख का चुनाव पर प्रभाव पड़ने की संभावना है।

इस विधानसभा चुनाव में असम जातीय परिषद व राजजोर दल जैसी क्षेत्रीय पार्टियाँ भी भाग लेंगीं। कांग्रेस को उम्मीद है कि मतदाता इस बार बदलाव के लिए वोट देंगे जबकि बीजेपी मानती है कि सर्वानंद सोनोवाल के राष्ट्रीय स्तर की राजनीति में जाने के बाद हिमंत बिस्वा सरमा ही असम में बीजेपी के प्रभावशाली नेता हैं जो पार्टी को विजय दिलाएंगे।

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12210				डॉ. सागर खादीवाला			
1	2	3	4				
				5			
		6			7		8
	9				10		
11	12	13			14		
		15			16		17
18				19		20	
			21				

बाएं से दाएं				Solution 12209			
हि	मा	च	ल	इ	ला	ज	
ल	क	ह	न	भ	ला		
ना	ग	वा	र	क	व		
	ह		वा	र	दा	त	
प	रा	म	श	दा	ता	न	
छा	ना		खि	र	ना		
इ	बं	ग	ला		नो		
ना	लं	दा	फो	ल	वा	न	

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है वर्ष के प्रारंभ में सामाजिककार्यों में ख्याति मिलेगी, नई योजनाओं में परामर्श होगा, वर्ष के मध्य में भूमि भवन आदि के मामलों में सफलता मिलेगी, वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा, वर्ष के अंत में राजनैतिक क्षेत्र में विवाद होगा, व्यापार व्यवसाय में भागदौड़ करना होगा, निकट संबंधी के कारण मानसिक तनाव रहेगा।

मेघ और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों के व्यापार में भागदौड़ रहेगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को राजनैतिक क्षेत्र में विवाद होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को निकट संबंधी के कारण मानसिक तनाव मिलेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को व्यापार में भागदौड़ रहेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को आपसी तनाव रह सकता है, सिंह राशि के व्यक्तियों को भूमि भवन संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को कम मेहनत में अच्छी सफलता के योग है।

आज जन्म शिशु का भविष्य आज जन्म लिये बालक का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। बालक सुन्दर सुशील मिलनसार होगा। बाग बगीचों में भूमि भवन मकानआदि का अच्छा सुख प्राप्त करेगा, कृषि एवं व्यवसाय दोनों क्षेत्रों में उन्नति करेगा। योजनाबद्ध तरीके से काम करेगा। न्यायप्रिय होगा।

धनु- भाग्यवर्धक शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आर्थिक एवं व्यवसायिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। यश मिलेगा। मकर- मित्रों एवं निकट संबंधियों का कार्य बने का योग है। स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी। तोड़ी बातें करने से अपनी को नाराज कर लेंगे। कुम्भ- उदर एवं विकार, रक्त विकार आदि से पीड़ा हो सकती है। सोच विचार कर निर्णय लेना हितकर रहेगा। कानूनी मामलों में धैर्य से काम लें। मीन- कोर्ट कचहरी आदि से संबंधित कार्य बने का योग है। स्वास्थ्य चिन्ता रह सकती है। धार्मिक आयोजनों में शामिल होने से खुशी होगी।

उदयकालीन ग्रह चाल

9	8	के.7 मू.	6	5
		च.मू.		
	10	श.	4	
11		1	रा.	3
	12	पु.	2	

पंचांग

रा.मि. 06 संवत् 2083 चैत्र शुक्ल नवमी भृगुवासर दिन 12/2, पुनर्वसु नक्षत्रे शाम 5/12, अतिगण्ड योगे रात 11/54, कौलव करणे सू.उ. 5/56, सू.अ. 6/4, चन्द्रचर मिथुन दिन 11/33 से कर्क, पूर्व- श्रीराम नवमी व्रत, जवाबे विसर्जन, शु.रा. 4,6,7,10,11,2 अ.रा. 5,8,9,12,1,3 शुभांक- 6,8,2.

चैत्र शुक्ल नवमी को पुनर्वसु नक्षत्र के प्रभाव से चना, गुड़, खांड, गेहूँ, सरसों, तिल, तेल, अलसी, अरंडी, के भाव में मंदा होगी। पिपरमेट के भाव में तेजी का रूख रहेगा। जौ, गेहूँ, चना, के भाव में मंदा होकर तेजी का योग है। भाग्यांक 1476 है।

SUDOKU 7342

	2			1				
		2	5	7	3			
9	4	6	7					2
5	4	3						9
8		9						7
1				2				
6		7	4		9	5		
	4	5	8	3				
	8							6

प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है। इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें। पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते। पहले की का केवल एक ही हल है।

नवभारत सुदो 7341								
9	1	6	2	3	7	4	5	8
8	2	3	4	5	9	1	7	6
4	5	7	1	6	8	3	9	2
5	6	8	7	1	2	9	3	4
1	7	4	9	8	3	2	6	5
2	3	9	5	4	6	8	1	7
7	4	1	8	9	5	6	2	3
3	8	5	6	2	1	7	4	9
6	9	2	3	7	4	5	8	1